वार्शी-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा यशवंतराव चव्हाण सभागृह में आयोजित 'सुख को एक अवसर दो' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा। कार्यक्रम में शरीक हुए आसिफ भाई तांबोळी,नगराध्यक्ष, ब्र.कु. सोमप्रभा दीदी, मंदाताई काळे,जिलाध्यक्ष,राष्ट्रवादी कांगेस, ब्र.कु. संगीता व अन्य अतिथि।

कथा सरिता

... सिर्फ हौसले की ज़रुरत ...

एक राजा के पास कई हाथी थे। लेकिन एक हाथी बहुत शक्तिशाली था। बहुत आज्ञाकारी, समझदार व युद्ध-कौशल में निपुण था। बहुत से युद्धों में वह भेजा गया था और वह राजा को विजय दिलाकर वापस लौटता था, इसलिए वह महाराज का सबसे प्रिय हाथी था। समय गुज़रता गया....और एक समय ऐसा भी आया, जब वह वृद्ध दिखने लगा। अब वह पहले की तरह कार्य नहीं कर पाता था। इसलिए अब राजा उसे युद्ध क्षेत्र में भी नहीं भेजते थे। एक दिन वह सरोवर में जल पीने के लिए गया, लेकिन वहीं कीचड़ में उसका पैर धँस गया और फिर धँसता ही चला गया।

उस हाथी ने बहुत कोशिश की, लेकिन वह उस कीचड़ से स्वयं को नहीं निकाल पाया। उसकी चिंघाड़ने की आवाज़ से लोगों को यह पता चल गया कि वह हाथी संकट में है। हाथी के फँसने का समाचार राजा तक भी पहुँचा। राजा समेत सभी लोग हाथी के आसपास इक्ट्ठा हो गए और विभिन्न प्रकार के शारीरिक प्रयत्न, उसे निकालने के लिए करने लगे। लेकिन बहुत देर तक प्रयास करने के उपरांत कोई मार्ग नहीं निकला।

तब राजा के एक वरिष्ठ मंत्री ने बताया कि आद्य शंकराचार्य जी प्रवास कर रहे हैं तो क्यों ना आद्य शंकराचार्य जी से सलाह मांगी जाये। राजा और सारा मंत्रीमंडल आद्य शंकराचार्य जी के पास गये और अनुरोध किया कि आप हमें इस विकट परिस्थिति में मार्गदर्शन करें।

आद्य शंकराचार्य जी ने सबके अनुरोध को स्वीकार किया। उन्होंने घटनास्थल का निरीक्षण किया और फिर राजा को सुझाव दिया कि सरोवर के चारो ओर युद्ध के नगाड़े बजाए जाएँ। सुनने वालों को विचित्र लगा कि भला नगाड़े बजाने से वह फँसा हुआ हाथी बाहर कैसे निकलेगा, जो अनेक व्यक्तियों के शारीरिक प्रयत्न से बाहर निकल नहीं पाया। आश्चर्यजनक रूप से जैसे ही युद्ध के नगाड़े बजने प्रारंभ हुए, वैसे ही उस मृतप्राय हाथी के हाव-भाव में परिवर्तन आने लगा। पहले तो वह धीरे-धीरे करके खड़ा हुआ और फिर सबको हतप्रभ करते हुए स्वयं ही कीचड़ से बाहर निकल आया।

अब आद्य शंकराचार्य जी ने सबको स्पष्ट किया कि हाथी की शारीरिक क्षमता में कमी नहीं थी, आवश्यकता मात्र उसके अंदर उत्साह का संचार करने की थी।

हाथी की इस कहानी से यह स्पष्ट होता है कि यदि हमारे मन में एक बार उत्साह-उमंग जाग जाए तो फिर हमें कार्य करने की ऊर्जा स्वत: ही मिलने लगती है और कार्य के प्रति उत्साह का मनुष्य की उम्र से कोई सम्बंध नहीं रह जाता। जीवन में उत्साह बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य सकारात्मक चिंतन बनाए रखे और निराशा को हावी न होने दे।

कभी-कभी निरंतर मिलने वाली असफलताओं से व्यक्ति यह मान लेता है कि अब वह पहले की तरह कार्य नहीं कर सकता, लेकिन यह पूर्ण सच नहीं है।

सकारात्मक सोच ही आदमी को 'आदमी' बनाती है.... उसे अपनी मंज़िल तक ले जाती है। हमेशा दूसरों को हिम्मत दो, उत्साह दो, हौसला दो, क्योंकि आपकी छोटी सी कोशिश कभी-कभी बहुत बड़ा काम कर जाती है।

अगर प्रेम... तो सब...

एक औरत ने तीन संतों को अपने घर के सामने बैठे देखा। वह उन्हें जानती नहीं थी। औरत ने कहा - 'कृपया भीतर आइये और भोजन करिए।' संत बोले - 'क्या तुम्हारे पति घर पर हैं?' औरत - 'वे अभी बाहर गए हैं।' संत - 'हम तभी भीतर आयेंगे जब वह घर पर हों।' शाम को उस औरत का पति घर आया और औरत ने उसे यह सब बताया। पति - 'जाओ और उनसे कहो कि मैं घर आ गया हूँ और उनको आदर सहित बुलाओ।' औरत बाहर गई और उनको भीतर आने के लिए कहा। संत बोले - 'हम सब किसी भी घर में एक साथ नहीं जाते।' 'पर क्यों?' - औरत ने पूछा। उनमें से एक संत ने कहा - 'मेरा नाम धन है।' फिर दूसरे संतों की ओर इशारा करके कहा - 'इन दोनों के नाम सफलता और प्रेम हैं। हममें से कोई एक ही भीतर आ सकता है। आप घर के अन्य सदस्यों से मिलकर तय कर लें कि भीतर किसे निमंत्रित करना है।' औरत ने भीतर जाकर अपने पति को यह सब बताया। उसका पति बहुत प्रसन्न हो गया और बोला - 'यदि ऐसा है तो हमें धन को आमंत्रित करना चाहिए। हमारा घर खुशियों से भर जाएगा।' पत्नी - 'मुझे लगता है कि हमें सफलता को आमंत्रित करना चाहिए।' उनकी बेटी दूसरे कमरे से यह सब सुन रही थी। वह उनके पास आई और बोली - 'मुझे लगता है कि हमें प्रेम को आमंत्रित करना चाहिए। प्रेम से बढ़कर कुछ भी नहीं है।' 'तुम ठीक कहती हो, हमें प्रेम को ही बुलाना चाहिए।'- उसके माता-पिता ने कहा। औरत घर के बाहर गई और उसने संतों से कहा - 'आप में से जिनका नाम प्रेम है, वे कृपया घर में प्रवेश कर भोजन ग्रहण करें।' प्रेम घर की ओर बढ़ चले। बाकी के दो संत भी उनके पीछे चलने लगे। औरत ने आश्चर्य से उन दोनों से पूछा - 'मैंने तो सिर्फ प्रेम को आमंत्रित किया था। आप लोग भीतर क्यों जा रहे हैं?' उनमें से एक ने कहा - 'यदि आपने धन और सफलता में से किसी एक को आमंत्रित किया होता तो केवल वही भीतर जाता। आपने प्रेम को आमंत्रित किया है, और प्रेम कभी अकेला नहीं जाता। प्रेम जहाँ-जहाँ जाता है, धन और सफलता उसके पीछे जाते हैं।'

भीलवाड़ा-राज.। गणतंत्र दिवस समारोह में जिला प्रशासन द्वारा 'व्यसन मुक्ति' के क्षेत्र में सराहनीय कार्यों के लिए ब्रह्माकुमारीज़ को पुरस्कृत किया गया। जिला कलेक्टर मुक्तानंद अग्रवाल तथा पुलिस अधीक्षक प्रदीप मोहन शर्मा से प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह व मेडल प्राप्त करते हुए ब्र.कु. इन्द्रा, ब्र.कु. अनीता तथा ब्र.कु. तरुणा।

सरिया-छ.ग.। 'सफलता के पाँच कदम एवं तनाव मुक्त जीवन' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए जगन्नाथ पाणिग्राही,प्रदेश कार्य समिति भाजपा, शरद यादव,अध्यक्ष,नगर पंचायत, ब्र.कु. डॉ. प्रभा मिश्रा, ब्र.कु. चित्रा, ब्र.कु. सुनयना तथा अन्य।

नवी मुम्बई-वाशी। अखिल भारतीय बस अभियान 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत' के वाशी पहुँचने पर आयोजित स्वागत कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित हैं युवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी, ब्र.कु. शीला दीदी, नगर सेवक प्रकाश मोरे तथा मेजर समीर खारपूड़े।

पनागर-जबलपुर(म.प्र.)। ज्ञानचर्चा के पश्चात् पूर्व विधायक नरेन्द्र त्रिपाठी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. खुशबू।

सेलाकुई-उत्तराखण्ड। 'राजयोग द्वारा तनाव मुक्त जीवन' कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात डॉक्टर ए.के. चौहान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सविता। साथ हैं ब्र.कु. सार्थक तथा अन्य।

पूर्णा जंक्शन-महा.। 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं मनिषाताई काळे,बाल विकास प्रकल्प अधिकारी, अखिल अहमद,शहर अध्यक्ष,राष्ट्रवादी, महबूब शेख,पुलिस निरीक्षक, प्रकाशदादा कांबळे,नगरपरिषद उपाध्यक्ष, महमूद बी. कुरेशी,नगरपरिषद नगरसेविका, तमन्ना ईमानदार,समाज कल्याण अधिकारी, ब्र.कु. प्रणिता, हर्षवर्धन गायकवाड,नगरपरिषद नगरसेवक तथा अन्य।